SA–06

June – Examination 2024

B.A. (Part–III) Examination

SANSKRIT

(वेद, उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन)

Paper : SA-06

*Time : **3** Hours*] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) विष्णु सूक्त ऋग्वेद के कौनसे मण्डल का कौनसा सूक्त है ?

खण्ड—स **2×14=28**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

10. अग्निसूक्त के अनुसार अग्निदेवता के स्वरूप का विशद विवेचन कीजिए।

11. अद्वैतवेदान्तदर्शन के अनुसार मायावाद की समीक्षा कीजिए।

12. न्यायदर्शन के अनुसार आत्मतत्व के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

13. जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

(ii) महर्षि पतंजलि के अनुसार ऋग्वेद की कितनी शाखाएं हैं ?

(iii) 'हिरण्यगर्भ किस स्थान के देवता हैं ?

(iv) काल सूक्त के ऋषि का नाम लिखिए।

(v) अक्षपाद दर्शन किस दर्शन को कहा जाता है ?

(vi) विकार किसे कहते हैं ?

(vii) ईश्वर का वाचक शब्द कौनसा है ?

खण्ड—ब **4×7=28**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 7 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की सन्दर्भ-अन्वय-अनुवाद सहित व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) ता वां वास्तून्युश्मशि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृंगा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परम पदमवभाति भूरि॥

अथवा

(ब) मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

3. न्याय दर्शन के अनुसार ईश्वर के षडैश्वर्य का वर्णन कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या संस्कृतभाषा में कीजिए—

(अ) यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत्।
योऽयं वो गूढ़मनुप्रविष्टो नान्यं तस्मान्नचिकेता वृणीते॥

अथवा

(ब) न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्नबभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥

5. ऋग्वेद के दार्शनिक सूक्तों पर संक्षेप में टिप्पणी कीजिए।

6. कठोपनिषद् के अनुसार श्रेय एवं प्रेय मार्ग को संक्षेप में समझाइए।

7. शिवसंकल्प सूक्त के आधार पर मन का विवेचन कीजिए।

8. चार्वाक दर्शन के अनुसार देहात्मवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

9. न्याय दर्शन के अनुसार असत्कार्यवाद को स्पष्ट कीजिए।